



संस्थान समाचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तताशाली) संस्था और उसके केंद्रों की समाचार पत्रिका



■ प्रकाशन : वर्ष : 11

■ अंक : 74

■ अक्टूबर 2025

अनुवाद: भाषा, तकनीक और भविष्य

मशीन और मानव में समन्वय जरूरी

केंद्रीय हिंदी संस्थान के 'अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग' द्वारा दिनांक 06-07 अक्टूबर, 2025 को "अनुवाद एवं मशीनी अनुवाद : भाषा, तकनीक और भविष्य" विषय पर संस्थान के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे की अध्यक्षता में संपन्न संगोष्ठी के उद्घाटन-सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में प्रो. विनोद कुमार मिश्रा, (अधिष्ठाता, त्रिपुरा विश्वविद्यालय) बीज वक्ता के रूप में साहित्यकार डॉ. नंदकिशोर आचार्य, शामिल हुए। इस दौरान संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर, संगोष्ठी संयोजक डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी सहित देश के अनेक विद्वान, शोधार्थी एवं छात्र उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण किया गया। संयोजक डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी, ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा आधार पत्र के जरिए अनुवाद के वर्तमान परिदृश्य, उसकी चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर गहन चिंतन के लिए जोर देते हुए अनुवाद के क्षेत्र में केंद्रीय हिंदी संस्थान की भूमिका को रेखांकित किया।



बीज वक्तव्य देते हुए डॉ. नंदकिशोर आचार्य ने अनुवाद को पूरी दुनिया में संवाद और मेलजोल के लिए एक अनिवार्य साधन बताया। उन्होंने कहा कि यह मानव के संवेदनात्मक जुड़ाव का कारक है और अपनी भाषा में विचारों एवं संवेदनाओं के अभाव की पूर्ति तथा भाषिक न्याय हेतु इसकी महती आवश्यकता है। डॉ. आचार्य ने अनुवादक की जिम्मेदारी पर जोर देते हुए कहा कि अनुवाद देश और समाज की मूल चेतना या मूल्यों के विरुद्ध नहीं जाना चाहिए।

संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने सत्र के दौरान पुरातन भाषाओं से लेकर संविधान में निहित भाषाओं के अनुवाद पर गहन विचार प्रकट किए। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं का हिंदी अनुवाद अपेक्षित मात्रा में न होने के कारण भारत की समग्रता को समझना मुश्किल हुआ है। उन्होंने मराठी से हिंदी

में हुए 'ज्ञानेश्वरी' के अनुवाद को पहला ऐतिहासिक अनुवाद बताते हुए मानव अनुवादक की आवश्यकता और मशीन की महत्ता दोनों के बीच संतुलन स्थापित करने पर जोर दिया।

सत्र के आमंत्रित वक्ता प्रो. विनोद कुमार मिश्रा ने कहा कि अनुवाद के बिना शेष भारत को समझना असंभव है। भारत और भारतीयता को साहित्य के माध्यम से समझने के लिए अनुवाद एक आवश्यक माध्यम है।

उन्होंने कहा कि हमें पारंपरिक अनुवादक तैयार करने होंगे, ताकि मशीन पर निर्भरता कम हो, क्योंकि भारतीय भाषाएँ स्वयं को अभिव्यक्त करने में पूर्णतः दक्ष और संपन्न हैं। शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर ने अनुवाद की व्यावहारिक समस्या बताते हुए कहा कि कई बार संगोष्ठियों के ब्रोशर आदि में हिंदी का अनुवाद इतना अस्पष्ट होता है

कि मूल अंग्रेजी पाठ को देखना पड़ता है।

सत्र के अध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में अनुवाद की भाषा, उसकी प्रामाणिकता और संप्रेषणीयता पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने श्रेष्ठ अनुवादक को शब्द के निकटतम अर्थ तक पहुँचने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी बताया और भाषिक अभेद्यता को पहचानने की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रो. दुबे ने तकनीकी प्रगति का स्वागत करते हुए भी मशीन की सीमाओं को रेखांकित किया और यह चेतावनी भी दी कि हमें इस बात की चिंता करनी होगी कि मशीन कहीं मनुष्य न हो जाए।

उद्घाटन सत्र में संस्थान के सभी विभागाध्यक्ष, प्रशासनिक अधिकारी, अनुभाग अधिकारी, विद्यार्थीगण आदि उपस्थित रहे। सत्र का संचालन डॉ. पुरुषोत्तम पाटील तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. परमान सिंह ने किया। शेष पृष्ठ 6 पर

अनुवाद के लिए स्वर्णिम है वर्तमान दौर : निदेशक

संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि तकनीक ने बहुत तरक्की की है। पच्चीस से तीस वर्ष पहले जो बातें काल्पनिक लगती थीं, आज साकार हो गई हैं। आज का तकनीकी दौर अनुवाद के लिए बहुत अच्छा है।

उन्होंने कहा कि दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की सफलता यही है कि हम सभी को अनुवाद करने के लिए

विभिन्न प्रारूपों का ज्ञान प्राप्त हुआ है। अनुवाद के क्षेत्र में हम सभी को अपडेट (अद्यतन) होने की आवश्यकता है। समापन सत्र के आरम्भ में संस्थान के निदेशक, प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, विशिष्ट अतिथि और कुलसचिव के द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया।

तत्पश्चात् निदेशक द्वारा विशिष्ट अतिथि को उत्तरीय और स्मृति चिह्न देकर स्वागत किया गया। डॉ. अरिमर्दन

कुमार त्रिपाठी, ने समाहार एवं डॉ. प्रणीता मिश्रा, ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस मौके पर विशिष्ट अतिथि प्रो. राजेंद्र प्रसाद पांडेय, (प्रोफेसर एवं पूर्व निदेशक, अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, इग्नू, दिल्ली) ने कहा कि मशीनी अनुवाद आवश्यक है, परंतु उसे स्वीकार करना अभी कठिन है। अनुवाद में हमें तय करना होगा कि ऑपरेशनल यूनिट क्या है।

अनुवादक को किसके प्रति (शब्द,

संस्कृति, भाव) निष्ठावान होना होगा। मानव अनुवाद भी शत-प्रतिशत सही नहीं होता, क्योंकि हर भाषा की अपनी प्रवृत्ति होती है, उसका रूपांतरण संभव नहीं है।

समापन सत्र में संस्थान के सभी विभागाध्यक्ष, कुलसचिव, प्रशासनिक अधिकारी, अनुभाग अधिकारी आदि उपस्थित रहे। सत्र का संचालन डॉ. सरोज राय एवं आभार कुलसचिव डॉ. अंकुश औधकर ने प्रकट किया।

भोग की नहीं, त्याग की भूमि है भारत : प्रो. सुरेन्द्र दुबे

दीपावली पर रंगारंग कार्यक्रम



'भारत का मूल भाव एवं भारतीय संस्कृति'

त्याग की भूमि है, भोग की नहीं। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि "अपना दीपक स्वयं बने"। प्राचीन समय में भारत की विकसित शिक्षा प्रणाली का उदाहरण देते हुए उन्होंने नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों का जिक्र किया और उनमें पढ़ाए जाने वाले विषयों जैसे शल्य चिकित्सा, खगोल विज्ञान और जीवन दर्शन के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी। इसके पश्चात् प्रो. शैलेंद्र कुमार सिंह (प्रोफेसर पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग) ने 'परसंग और परसंगीय शब्दावली' पर तथा डॉ. राम भवसार ने 'हिंदी की वाक्य संरचना' पर अत्यंत प्रभावशाली व्याख्यान प्रस्तुत किए।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा दिनांक 06 और 07 अक्टूबर 2025 को 'भारत का मूल भाव एवं भारतीय संस्कृति' विषय पर दो दिवसीय व्याख्यान का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त ज्ञानवर्धक प्रेरणादायी व्याख्यान में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे तथा संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने मार्ग दर्शन किया। कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों से आए नामचीन विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

विस्तार से प्रकाश डाला। इसके बाद साहित्य अकादमी से पुरस्कृत प्रसिद्ध साहित्यकार श्री नंदकिशोर आचार्य ने साहित्य की विभिन्न विधाओं और भाव-प्रकाशन के माध्यमों पर रोचक चर्चा की। विद्यार्थियों ने उनसे संवाद के दौरान अनेक प्रश्न पूछे, जिनका उन्होंने सहजता से समाधान किया।

दूसरे दिन का पहला व्याख्यान प्रो. सोनू सेनी (रूसी भाषा अध्ययन केंद्र, जेएनयू, नई दिल्ली) द्वारा 'हिंदी भाषा का वैश्विक परिप्रेक्ष्य' विषय पर प्रस्तुत किया गया। उन्होंने भाषा-अनुवाद की चुनौतियों और हिंदी की अंतरराष्ट्रीय भूमिका पर अपने विचार रखे।

इसके बाद केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने प्रेरक व्याख्यान देते हुए कहा कि भारत

कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डॉ. जोगेंद्र सिंह मीणा, डॉ. पुरुषोत्तम पाटील, डॉ. दीपामणि बरुआ, डॉ. रेणु चौधरी, डॉ. परमान सिंह, डॉ. शमा और डॉ. अरविंद रावत ने सक्रिय सहयोग दिया। दूसरे दिन संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की विशेष उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा को और बढ़ाया। दो दिवसीय यह व्याख्यान श्रृंखला शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए एक समृद्ध शैक्षणिक और सांस्कृतिक अनुभव के रूप में यादगार रही।



केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग तथा अध्यापक शिक्षा विभाग के संयोजन से दीपावली का रंगारंग कार्यक्रम स्वदेशी एवं विदेशी छात्रों के द्वारा आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में प्रो. हरीशंकर, (शैक्षिक समन्वयक), की ओर से सभी छात्रों, शिक्षकों एवं कार्मिकों को दीपावली की शुभकामनाएँ दी गयीं।

कार्य दायित्व

लोक साहित्य हिंदी-भदरवाही अध्येता कोश, हिंदी बघेली अध्येता कोश, भोजपुरी, रोडमई, आओ लोक साहित्य का कार्य दायित्व विशेषज्ञों को सौंपा गया। इसके अतिरिक्त कार्यालयी कार्यों के साथ लोक साहित्य परियोजना के अंतर्गत सामग्री का प्रूफ संशोधन कार्य किया गया।

भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रमों से मिलती है सीखने की दृष्टि : निदेशक

"हमारे जीवन में जो अविस्मरणीय घटनाएँ घटित होती हैं उन्हें हम सदैव याद करते हैं, वह हमें एक सुखद याद तो देती ही है साथ ही बहुत से अनुभव और भावी जीवन के लिए बेहतर दृष्टिकोण भी प्रदान करती हैं।"

उक्त बातें केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहीं। मौका था संस्थान के नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा दिनांक 07.10.2025 से 24.10.2025 तक राजकीय हिंदी संस्थान, दीमापुर, नागालैंड के हिंदी भाषा कौशल पाठ्यक्रम के 20 प्रशिक्षणार्थियों हेतु आयोजित हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम के उद्घाटन समारोह का।

कार्यक्रम के दौरान प्रो. कुळकर्णी ने विश्वास दिलाते हुए कहा कि तीन सप्ताह की यह यात्रा कार्यक्रम में शामिल सभी प्रतिभागियों को समग्र जीवन को देखने के लिए एक नई दिशा प्रदान करेगी। उन्होंने कहा, 'आप निश्चित ही सिर्फ हिंदी सीखने



नहीं आए हैं, आप उसके साथ-साथ बहुत कुछ सीखेंगे। हिंदी तो महज एक बहाना है हिंदी के माध्यम से आप भ्रमण भी करेंगे। अभी तक जिन ऐतिहासिक इमारतों के बारे में आपने सिर्फ किताबों में ही पढ़ा है, ताजमहल, लाल किला आदि उसे आप प्रत्यक्ष देख पाएंगे।

इस दौरान राजकीय हिंदी संस्थान, दीमापुर नागालैंड से आए सहायक प्राध्यापक श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह, महाराष्ट्र से पधारे डॉ. विश्वास पाटील, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की विभागाध्यक्ष एवं पाठ्यक्रम संयोजक प्रो. सपना गुप्ता, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग

की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा किया गया।

पाठ्यक्रम में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, प्रो. हरिशंकर, डॉ. मीनाक्षी द्वारा विशेष व्याख्यान दिए गए। प्रो. शंका गुप्ता द्वारा आरंभ अध्ययन, प्रो. उमापति दीक्षित द्वारा हिंदी भाषा एवं साहित्य का परिचय, डॉ. अनामिका गुप्ता भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा की संरचना भाषा एवं तुलना शब्दावली एवं डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा, अन्य हिंदी शिक्षण

और हिंदी भाषा परिमार्जन की कक्षाएं ली गईं। प्रशिक्षणार्थियों ने अवकाश दिवसों में आगरा में ताजमहल, लालकिला और सिकंदरा के स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों का शैक्षिक संदर्शन किया।

पाठ्यक्रम का समापन समारोह दिनांक 24.10.2025 को डॉ. मीनाक्षी दुबे, (विभागाध्यक्ष, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग) की अध्यक्षता में किया गया। राजकीय हिंदी संस्थान, दीमापुर, नागालैंड से पधारे सहायक प्राध्यापक श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह एवं महाराष्ट्र से आए डॉ. विश्वास पाटील ने अध्यापकों द्वारा दिए गए प्रशिक्षण की सराहना की एवं आभार व्यक्त किया।

इस दौरान परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को पुरस्कृत भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनामिका गुप्ता, द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर कार्यक्रम

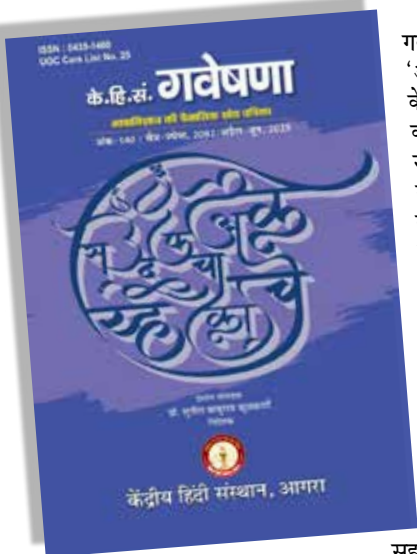


केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा द्वारा 31 अक्टूबर 2025 को लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान के पुरुष छात्रावास स्थित खेल मैदान पर रन फॉर यूनिटी एवं राष्ट्रीय एकता शपथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी (निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा) द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि सरदार पटेल जी ने एकजुट, सशक्त और समृद्ध भारत का स्वप्न देखा था जिसे उन्होंने अपने अद्भुत नेतृत्व, दूरदृष्टि और दृढ़निश्चय से यथार्थ रूप प्रदान किया। कार्यक्रम में निदेशक द्वारा सभी शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को एक स्वर में देश की एकता और अखण्डता बनाये रखने का संकल्प एवं शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग के विद्यार्थियों एवं अध्यापक शिक्षा विभाग के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों ने रन फॉर यूनिटी के लिए दौड़ में भाग भी लिया।

धूम-धाम से मनाया गया दशहरा



केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में दशहरा विजयादशमी के उपलक्ष्य में स्वदेशी और विदेशी छात्रों के साथ 'रावण दहन' का कार्यक्रम किया गया। इस अवसर पर पर्व के मनाने के पीछे की वैज्ञानिकता को बताते हुए इसके महत्व पर प्रकाश डाला गया।



गवेषणा के ताजा प्रकाशित 'अंक-140' में भाषाविज्ञान के विविध पक्षों से आलेखों का चयन किया गया है। साथ ही इसमें केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के दिल्ली केंद्र द्वारा दिनांक 17 एवं 18 फरवरी, 2025 को 'हिंदी शिक्षण अधिगम: परंपरा और समकालीन संदर्भ' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी से उत्तम चयनित शोधपत्रों का भी समावेश करते हुए कुल 19 आलेखों को प्रकाशित किया गया है।

इस अंक का संपादन सह-संपादन कार्य डॉ. अरिंमदन कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया।

संपादकीय

कटा ज़िंदगी का सफ़र धीरे-धीरे....



प्रिय पाठकों
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा वर्ष 2002 के महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार से सम्मानित, जीवन के 101 बसंत देख चुके साहित्य के दीर्घकालिक श्रमिक राम दरश मिश्र जी नहीं रहे। इन दिनों पूर्व की तुलना में जीवन प्रत्याशा बढ़ी है, लेकिन शतायु पूर्ण करने का सौभाग्य बिरले को ही प्राप्त होता है। कन्नड़ और संस्कृत के प्रख्यात साहित्यकार आध्यात्मिक गुरु श्री श्री शिव कुमार (111 वर्ष), मैथिली भाषा के सिद्ध साहित्य सर्जक गोविंद झा (102 वर्ष), समान रूप से बांग्ला और अंग्रेजी के लेखक नीरद सी चौधरी (101 वर्ष) की तरह मिश्र जी ने गत वर्ष तक साहित्य सेवा की।

गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) के डुमरी गाँव में 15 अगस्त 1924 को जन्मे बहुआयामी हिंदी साहित्यकार जितने अच्छे कवि थे उससे भी अच्छे लेखक। अपनी तकरीबन 75 वर्ष की साहित्य साधना में मिश्र जी ने गद्य एवं पद्य की सभी विधाओं में खूब-खूब लिखा। वर्ष 1991 में उनका पहला काव्य संग्रह 'पथ के गीत' आया था, उसके बाद मिश्र जी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद वह गुजरात के सयाजीराव गायकवाड़ विश्वविद्यालय बड़ौदा में प्राध्यापक हो गए। 1964 में वे दिल्ली विश्वविद्यालय आए और वर्ष 1990 में सेवानिवृत्त हो गए थे, लेकिन उनका रचनात्मक संसार सेवानिवृत्ति के बाद और भी महक उठा। उनके सृजनात्मक लेखन में उपन्यास, कहानी संग्रह, कविता संग्रह, यात्रावृत्त, डायरी, ललित निबंध, आलोचना, संस्मरण और साक्षात्कार सभी कुछ है। यहाँ तक कि उनकी आत्मकथा 'सहचर है समय' भी एक अनमोल साहित्यिक धरोहर है। उनकी कुल 150 पुस्तकों में से बहुत सी कृतियाँ देश के बड़े साहित्यिक सम्मानों से पुरस्कृत हो चुकी हैं। इन कृतियों में आम के पत्ते, अपने लोग, कंधे पर सूरज, जहाँ मैं खड़ा हूँ, रोशनी की पगडंडियाँ, हिंदी आलोचना का इतिहास, एक वह, मैं तो यहाँ हूँ, जल टूटता है, कितने बजे हैं, आज का हिंदी साहित्य और 'हिंदी उपन्यास एक अंतरयात्रा' प्रमुख हैं। इन कृतियों के लिए मिश्र जी को पद्म श्री, सरस्वती सम्मान, शालाका सम्मान, भारत-भारती सम्मान, व्यास सम्मान, विश्व हिंदी सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान के साथ-साथ केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की ओर से महापंडित राहुल सांकृत्यायन सम्मान भी प्रदान किया गया। उनकी कृति 'आग की हँसी' के लिए साहित्य अकादमी का पुरस्कार भी उन्हें दिया गया जिसे पाने का सपना हर साहित्यकार देखता है।

साहित्यिक खेमेबाजी से कोसों दूर रामदरश जी ऋषि परंपरा के जीवंत उदाहरण थे। बातचीत में 'सादा जीवन उच्च विचार' को लंबे जीवन का राज मानते थे। सिक्के के दो पहलू की तरह एक पक्ष से सम्मान पाकर अभिभूत थे वहीं दूसरे पक्ष में देर से या यूँ कहें कि चौथेपन में पहुँचने के बाद सम्मान देने की कसक उन्हें हमेशा सालती रही। इसमें कोई दो राय नहीं कि जिस वक्त रामदरश जी अपनी साहित्यिक साधना में लीन थे, उस दौर में साहित्यिक सम्मानों, पुरस्कारों और बड़े ओहदों पर वामपंथियों का कब्जा था। यत्र-तत्र-सर्वत्र वामविचारी ही लाभान्वित होते रहे। लेकिन कहते हैं कि रात चाहे जितनी अंधेरी हो ऊर्जा के साथ सुबह का सूरज चमकता ही है। उनकी लेखनी ठहरी नहीं। कभी गाँव की गलियों की याद लेकर तो कभी शहर की जन आवाज की लय में लगातार मुखरित होती रही। उनकी कविताओं में भाषा का कोई प्रदर्शन नहीं था बल्कि एक विश्वास था जो मन में धीरे से उतरता और अपनी जगह बना लेता। उन्होंने बदलते युग में मनुष्य की पीड़ा, मूल्यबोध और संघर्ष को गहराई से महसूस किया और उसे सादगी भरे शब्दों में व्यक्त किया। साहित्य के माध्यम से उन्होंने यह दिखाया कि साधारण जीवन में भी सौंदर्य और अर्थ छिपे होते हैं। उन्होंने विपुल मात्रा में साहित्य रचा है जो सार्थक भी है और पठनीय भी। उनके मुकम्मल व्यक्तित्व को उन्हीं के एक गीत की इन पंक्तियों से व्याख्यायित किया जा सकता है, "जहाँ लोग पहुँचे छलांगें लगाकर, वहाँ मैं भी पहुँचा, मगर धीरे-धीरे।"

जाना संसार का नियम है। लेकिन किसी के भी जाने की अहमियत इस बात से होती है कि वह जाने के बाद भी कितना रह जाता है। उनकी विदाई से साहित्य जगत को एक गहरी खलिश हुई है। कविताओं में एक शताब्दी का स्वर लिए भले ही उनकी देह हमारे बीच नहीं है लेकिन सच तो यह है कि बाजरिए साहित्य वह अब भी यही है और यही रहेंगे।

निदेशक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी 'देशगढाणकर'

हिंदी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा

दीपावली समारोह



केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा तथा डी.ए.वी. कॉलेज, अमृतसर, पंजाब के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 31 अक्टूबर, 2025 को भारतीय हिंदी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा : विविध विमर्श" विषयक एक दिवसीय लघु बजटीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा (शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार) से अनुदानित इस संगोष्ठी में पूरे भारत के हिंदी/अहिंदी भाषी विद्वानों सहित भारतीय मूल के प्रवासी हिंदी साहित्यकारों ने भी सहभागिता की। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अमरदीप गुप्ता के निर्देशन और अध्यक्ष हिंदी विभाग डॉ. किरण खन्ना के संयोजन में आयोजित इस कार्यक्रम में बीज वक्ता की भूमिका में डॉ. तेजेन्द्र शर्मा (एमबीई लंदन यूके), विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. अपर्णा सारस्वत (क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय संस्थान दिल्ली केंद्र) ने प्रतिभागिता की। कार्यक्रम की अध्यक्षता पद्मश्री डॉ. हरमोहिंदर सिंह बेदी ने की।

कार्यक्रम में बिजनौर से वनस्पति विज्ञान की प्राध्यापिका डॉ. भारती चौहान, डॉ. अदिति सिन्धु, प्रतिष्ठित साहित्यकर्मी डॉ. नीरजा शर्मा, आगरा से डॉ. शुभदा पांडे, दिल्ली से प्रोफेसर पूजा

गोस्वामी, पटियाला विश्वविद्यालय से डॉ. जसविंदर सिंह, डॉ. शोफाली बेदी, बठिंडा विश्वविद्यालय से डॉ. समीर महाजन, होशियारपुर से डॉ. दीपक, फगवाड़ा से डॉ. नीलू शर्मा, जालंधर से डॉ. मनिंदर कौर, डॉ. मीनू नंदा, डॉ. रिचा नागला, डॉ. निधि शर्मा, फतेहगढ़ से डॉ. रश्मि शर्मा सहित गुरु नगरी से प्रोफेसर डॉ. विनोद तनेजा जी, डॉ. अतुला भास्कर, डॉ. सविता रामपाल, डॉ. राजदेविन्दर कौर, डॉ. गगनदीप, डॉ. बाबुशा, प्रोफेसर पूनम कुमारी, श्री नवदीप जोशी, डॉ. अमनदीप, डॉ. सीमा शर्मा इत्यादि ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। पूरे भारत से प्राप्त शोध आलेखों को प्रकाशित कर पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

बीज वक्ताव्य देते हुए श्री तेजेन्द्र शर्मा ने कहा कि परंपरा का ज्ञान के अनुकूल होना आवश्यक है किन्तु हमें समझना होगा कि ज्ञान और परंपरा दो अलग-अलग विषय हैं। भारतीय परंपरा बताती है कि ज्ञान सदैव योग्य को दिया जाए तो ही फलित होता है।

विशिष्ट वक्ता प्रो. अपर्णा सारस्वत ने अपने संबोधन में कहा कि किसी राष्ट्र की प्रगति के लिए शिक्षण, विज्ञान, तकनीकी,

एक दिवसीय लघु बजटीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

वाणिज्य आदि अनिवार्य तत्व हैं जो राष्ट्र के भविष्य को आधार भूमि प्रदान करते हैं। इन सभी विषयों की जड़ों में भारतीय ज्ञान परंपरा विद्यमान है। पद्मश्री डॉ. बेदी ने अध्यक्षीय वक्तव्य में बताया कि परंपराएँ ऐतिहासिक विकास में, एक युग से दूसरे में संक्रमण के समय मौजूद जरूर रहती हैं, इन्हें संरक्षण दिया जाना आवश्यक है। डॉ. भारती ने भारतीय ज्ञान परंपरा के सांस्कृतिक पक्ष, डॉ. शुभदा ने ऋषि परम्परा, डॉ. नीरजा ने दार्शनिक पक्ष, डॉ. अतुला, डॉ. जसविंदर, डॉ. समीर, डॉ. दीपक ने पंजाब में रचित साहित्य में परंपरागत विमर्श पर विचार प्रस्तुत किये। प्राचार्य डॉ. अमरदीप गुप्ता ने संगोष्ठी के आयोजन पर विभाग को शुभकामनाएँ दीं और भविष्य में ऐसे आयोजनों के लिए प्रेरित किया। संगोष्ठी के लिए प्रो. अपर्णा सारस्वत, क्षेत्रीय निदेशक तथा श्री योगेंद्र सिंह राणा, लघु श्रेणी लिपिक (तदर्थ) को प्रतिनियुक्त किया गया। संगोष्ठी के अंत में सभी सुधी वक्ताओं को स्मृति चिन्ह, अंग वस्त्र, पुस्तक और प्रमाणपत्र के साथ सम्मानित किया गया।

दीमापुर-शिलांग केंद्र

चेगा गादी उत्सव में संस्थान की भागीदारी

केंद्रीय हिंदी संस्थान, दीमापुर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. थुन्बुई जेलियांग, ने चेगा गादी उत्सव में विशिष्ट अतिथि के रूप में भागीदारी की। लियांगमाई वेलफेयर सोसाइटी कोहिमा (एल डब्लू एस के) द्वारा अपने समुदाय की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के सम्मान में 'हमारी संस्कृति, हमारा गौरव, हमारा उत्सव' के थीम पर 31 अक्टूबर को कूजो पार्क, त्सीसे बासा में उत्सव का आयोजन किया गया।

यह उत्सव कृषि वर्ष की पूर्णता का प्रतीक है तथा ईश्वर के प्रति समृद्ध फसल, स्वास्थ्य और जीवन के लिए कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। कार्यक्रम का शुभारंभ रेवेरेंड एन सिलुबो जेलियांग के वक्तव्य एवं प्रार्थना से हुआ। लियांगमाई वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष रुत्मकबो ने अपने स्वागत भाषण में लियांगनाई समुदाय की उन्नति



और समृद्धि की कामना की।

क्षेत्रीय निदेशक दीमापुर ने चेगा गादी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह पर्व समुदाय में एकता, शांति और भाईचारे की भावना को मजबूत करता है तथा लियांगमाई जनजाति की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में सहायक है। साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि वर्तमान पीढ़ी के युवा समाज अपनी पारंपरिक त्योहारों एवं सांस्कृतिक पर्वों के ज्ञान से अछूते न रह जाए इसलिए इस प्रकार के त्योहारों का आयोजन

समय-समय पर किया जाना चाहिए। त्योहारों के प्रत्यक्ष दर्शन से ही नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत को आगे ले जाने में सहायता मिलेगी।

कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों के लिए सर्वश्रेष्ठ पारंपरिक परिधान प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें बच्चों ने रंग-बिरंगे पारंपरिक वस्त्रों में भाग लेकर अपनी संस्कृति की झलक प्रस्तुत की। साथ ही पारंपरिक खेल जैसे शॉट पुट और रस्साकशी ने उत्सव में रोमांच और आनंद का वातावरण बनाया। इंजी. केविजुन जेलियांग, कोषाध्यक्ष, एल डब्लू एस के ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन बेंगकाम नेमाई, खेल सचिव, एल डब्लू एस के द्वारा किया गया। उत्सव का समापन सामूहिक भोज के साथ हुआ, जिसमें समुदाय के सभी सदस्यों ने पारंपरिक व्यंजनों का आनंद लिया।

प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय 'सम्मानित'

केंद्रीय हिंदी संस्थान शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, को डॉ.ए. पी. जे.

अब्दुल कलाम के 94वें जन्म वर्ष पर पूर्वोत्तर भारत में राजभाषा हिंदी एवं हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु प्रतिष्ठित 'डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम इंटरनेशनल अवॉर्ड 2025' से सम्मानित किया गया।

प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय शिक्षा, संस्कृति और हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान दे रहे हैं। उनके करियर की शुरुआत एक सामान्य शिक्षक के रूप में हुई थी, परंतु उनके संकल्प, समर्पण और दूरदर्शिता ने उन्हें शिक्षा जगत में एक आदर्श नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित किया।

490वें नवीकरण पाठ्यक्रम का उद्घाटन व समापन समारोह

केंद्रीय हिंदी संस्थान के हैदराबाद द्वारा आंध्र प्रदेश राज्य के मॉडल स्कूल के हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए दिनांक 06.10.2025 से 17.10.2025 तक 490वें नवीकरण पाठ्यक्रम का उद्घाटन समारोह दि. 06.10.2025 को संपन्न हुआ। संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में इफ्लू, हैदराबाद के पूर्व विभागाध्यक्ष, प्रो. श्यामराव राठोड़ उपस्थित रहे। इस मौके पर पाठ्यक्रम के संयोजक हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास (अतिथि प्रवक्ता) एवं डॉ. एस. राधा उपस्थित थीं। इस कार्यक्रम में कुल 38 (महिला-27, पुरुष-11) प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

मुख्य अतिथि प्रो. श्यामराव राठोड़ ने कहा कि सभी प्रशिक्षण में आए हुए अध्यापक तेलुगुभाषी हैं जिस कारण उन्हें हिंदी पढ़ाने में दिक्कत का सामना करना पड़ता है। तेलुगु पर संस्कृत भाषा का भी प्रभाव है जिस कारण उसके उच्चारण में और हिंदी के उच्चारण में प्रायः भिन्नता देखने को मिलती है। लेकिन सही प्रशिक्षण प्राप्त होने पर उन कमियों को दूर किया जा सकता है।

पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. फत्ताराम नायक ने कहा कि "इस प्रशिक्षण से जो भी आशाएँ लेकर आए हैं उन पर खरा उतरने की हम पूरी कोशिश करेंगे। व्याकरण संबंधी दिक्कतों एवं साहित्य की अशुद्धियों को इस प्रशिक्षण के माध्यम से



दूर किया जाएगा जिससे आप अपने छात्रों को सही शिक्षण दे सकें।" इस अवसर पर डॉ. दीपेश व्यास ने कहा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से पढ़ाते समय आने वाली व्याकरण संबंधी समस्याओं को दूर किया जाएगा।

पाठ्यक्रम का समापन समारोह दि. 17.10.2025 को संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने आभासीय मंच के माध्यम से की। मुख्य अतिथि के रूप में केनरा बैंक, हैदराबाद के पूर्व सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ. वी. वेंकटेश्वर राव, विशिष्ट अतिथि के रूप में भारत सरकार : हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य श्री श्रुतिकान्त भारती एवं हिंदी प्रचार सभा के कुलसचिव, डॉ. शंकर सिंह ठाकुर उपस्थित रहे। इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, डॉ. संध्या दास एवं डॉ. राजीव कुमार सिंह उपस्थित थे।

निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि प्रशिक्षण में आप सभी ने जो

पाठ्यक्रम के दौरान सीखा वह अपने छात्रों को सिखाकर उन्हें लाभान्वित करेंगे। आज हिंदी पूरे विश्व की भाषा बन गई है। हमारी जनसंख्या पहले हमें अपनी कमजोरी लगती थी पर उसी जनसंख्या के कारण आज हमारे देश में नए-नए व्यापारिक आयाम स्थापित हो पा रहे हैं। तकनीकी एवं हिंदी सिनेमा आदि के माध्यम से हम हिंदी का प्रचार-प्रसार कर सकते हैं। इस प्रशिक्षण के माध्यम से आप सभी का तन एवं मन दोनों शुद्ध हुए होंगे। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. वी. वेंकटेश्वर राव ने कहा कि इस संस्था में आकर जो ज्ञान प्राप्त होता है, वह अन्यत्र नहीं। सिर्फ ज्ञान रूपी दीपक की बात करने से अंधेरा दूर नहीं होता बल्कि अंधेरे को दूर करने के लिए हमें चलकर दीपक को जलाना होगा। इसलिए हिंदी को जानने के लिए हमें स्वयं हिंदी पढ़ना और पढ़ाना होगा।

विशिष्ट अतिथि के रूप में मिलिंद प्रकाशन एवं स्वतंत्रता सेनानी परिवार से जुड़े श्री श्रुतिकान्त भारती ने अपने जीवन के अनुभव को साझा करते हुए प्रतिभागी अध्यापकों को आशीर्षक दिया तथा कहा कि आपकी मातृभाषा आपके लिए

महत्वपूर्ण है। लेकिन देश-विदेश में पहचान हिंदी भाषा ही दिलाएगी। आज हिंदी वैश्विक रूप में उभर रही है जिसमें दक्षिण भारत की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम तथा अतिथि प्रवक्ता डॉ. दीपेश व्यास ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन कोलपल्लि हर्षवर्धन द्वारा किया गया। इस पाठ्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने हस्तलिखित पत्रिका "आंध्र रत्नावली" की रचना की। समापन समारोह के दौरान अतिथियों द्वारा हस्तलिखित पत्रिका का लोकार्पण किया गया। प्रतिभागियों को अतिथियों के द्वारा प्रमाण पत्र वितरित किए गए। पर-परीक्षण के आधार पर उत्तम अंक प्राप्त छात्रों को विशेष पुरस्कार दिए गए। रावूरि माल्याद्रि को प्रथम पुरस्कार, कालवा श्रीदेवी को द्वितीय पुरस्कार, एम. रूक्साना पर्वीन को तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। पातूरि कल्याणि को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। इस पाठ्यक्रम के समापन समारोह में प्रतिभागियों द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। पाठ्यक्रम से संबंधित प्रतिक्रियाएँ प्रतिभागी सुहासिनी, एम. अनिल कुमार, एम. रूक्साना पर्वीन, हर्षवर्धन एवं शेषर द्वारा दी गईं। महिला प्रतिभागियों द्वारा सामूहिकनृत्य 'कोलाटम' तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए संस्थान परिवार का भरपूर सहयोग रहा। अंत में राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ।

लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती पर कार्यक्रम



दिनांक 31.10.2025 को हैदराबाद क्षेत्रीय केंद्र के बहुउद्देशीय हॉल में आधुनिक भारत के शिल्पकार लौहपुरुष भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए।

संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक ने इस अवसर पर कहा कि पटेल जी का राष्ट्र की एकता, अखंडता और प्रशासनिक सुदृढ़ता के प्रति अद्वितीय योगदान सदैव भारतवासियों के लिए प्रेरणास्रोत रहेगा। अतिथि प्रवक्ता

डॉ. दीपेश व्यास ने कहा कि सरदार वल्लभ पटेल ने देश की रियासतों को जोड़कर अखंड भारत की नींव रखी। संस्थान की कार्यालय अधीक्षक डॉ. एस. राधा ने देश के पहले उप प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री पटेल के स्वतंत्रता आंदोलन में सहभागिता पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर संस्थान के लिपिक डॉ. संदीप कुमार एवं पुस्तकालय लिपिक श्री सजग तिवारी ने भी सरदार पटेल के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

जन्म-जयंती समारोह आयोजित



महात्मा गांधी जयंती एवं लाल बहादुर शास्त्री के जन्म दिवस 2 अक्टूबर, 2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक के साथ संस्थान के कर्मचारियों ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

इस अवसर पर डॉ. फत्ताराम नायक ने कहा कि गांधी जी की अहिंसावादी सोच व शास्त्री जी की सादगी भरी जीवन शैली सबके लिए प्रेरणा स्रोत है। केंद्र के अतिथि प्रवक्ता डॉ. दीपेश व्यास ने देश

की आजादी में दोनों महापुरुषों के योगदान पर प्रकाश डाला। संस्थान के लिपिक डॉ. संदीप कुमार ने गांधी के दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार पर किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला। पुस्तकालय लिपिक सजग तिवारी ने कहा कि गांधी जी द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्य आज भी अनुकरणीय हैं। शेख मस्तान वली ने धन्यवाद दिया। इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशक के मार्गदर्शन में साफ-सफाई कार्य संस्थान के कर्मचारियों द्वारा किया गया।

राष्ट्रगान एवं राष्ट्र ध्वज जैसा हो हिंदी का सम्मान: निदेशक

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के मैसूर क्षेत्रीय केंद्र पर दिनांक 08.10.2025 से 15.10.2025 तक हिंदी पखवाड़ा के तहत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। दिनांक 15.10.2025 को हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं का समापन समारोह हुआ। कार्यक्रम के दौरान कुल पाँच प्रतियोगिताओं- निबंध लेखन, वाद-विवाद, हिंदी भाषण, स्वरचित कविता पाठ एवं पोस्टर निर्माण का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में मैसूर की चार संस्थाओं- टेरेशियन

महाविद्यालय, सेंट जोसेफ महिला महाविद्यालय, महारानी महिला महाविद्यालय एवं डी पॉल अंतरराष्ट्रीय आवासीय विद्यालय के कुल 110 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। इस प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार एवं सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाणपत्र दिए गए।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने आभासी माध्यम से की। उन्होंने अपने वक्तव्य

में आयोजकों और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए हिंदी को राष्ट्रीय आंदोलन की भाषा और अनेकता में एकता बनाए रखने की भाषा के रूप में इसके महत्व को उजागर किया।

उन्होंने हिंदी के विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा कि जिस प्रकार से देश के सभी राज्यों द्वारा भारत के राष्ट्रगान एवं राष्ट्र ध्वज का सम्मान होता है उसी प्रकार हमें हिंदी का भी सम्मान करना होगा तभी देश को एक सूत्र में बांधा जा सकता है।

उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा का देश को अंग्रेजों से आजादी दिलाने में बहुत ही बड़ा योगदान है। आजादी की लड़ाई लड़ने में हिंदी ने देश को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया था।

हिंदी पखवाड़े के समापन कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन क्षेत्रीय निदेशक, मैसूर केंद्र द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान कन्नड़ शिक्षिका डॉ. भावना, डॉ.फहिरा शाह एवं केंद्र के कर्मी श्री राघवेंद्र, श्रीमती पदमा, रेहाना, ननजुंड स्वामी चेंन्नेगोडा आदि मौजूद थे।

पृष्ठ एक का शेष

मशीन एवं मानव दोनो की महत्ता: प्रो. मिश्र

प्रथम अकादमिक सत्र की अध्यक्षता प्रो. विनोद कुमार मिश्र, (अधिष्ठाता, त्रिपुरा विश्वविद्यालय) ने की। इस सत्र में विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. उमाकांत चौबे ने 'हिंदी नवजागरण एवं अनुवाद' विषय पर अपनी बात रखी। पत्र प्रस्तोता डॉ. नीलम यादव ने 'भोजपुरी मुहावरों का अनुवाद, समस्याएँ व समाधान' पर चर्चा की। डॉ. शालिनी श्रीवास्तव का विषय 'अनुवाद की साहित्यिक महत्ता में चुनौती है मशीनी अनुवाद' रहा। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. विनोद कुमार मिश्रा ने कहा कि मशीन एवं मानव अनुवाद, दोनों की महत्ता अपनी-अपनी जगह है। अतः सामंजस्यता बनाकर चलना चाहिए। सत्र का संचालन डॉ. अनामिका गुप्ता एवं आभार डॉ. तस्मीना हुसैन ने दिया।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान है अनुवाद: डॉ. पाटील

'अनुवाद का सांस्कृतिक आयाम' विषयक द्वितीय अकादमिक सत्र की अध्यक्षता डॉ. विश्वास पाटील, (महाराष्ट्र) ने की। इस सत्र में विषय प्रवर्तन करते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. आशुतोष मिश्रा ने 'अनुवाद की सांस्कृतिक भूमिका' विषय पर अपनी बात रखी। त्रिपुरा से आए डॉ. आलोक कुमार पाण्डेय ने 'त्रिपुरा का भाषाई वैविध्य : अनुवाद की उपादेयता' विषय पर चर्चा की। डॉ. अरुण कुमार, प्रो. शिल्पी कुमारी एवं डॉ. मयंक त्रिपाठी का विषय "मानव बनाम मशीन अनुवाद : सामाजिक संदर्भ, सांस्कृतिक बारीकियों का संरक्षण, भावनात्मक गहराइयों की अभिव्यक्ति और शुद्धता तथा भाषा प्रवाह के संदर्भ में" पर केंद्रित रहा। इस क्रम में प्रो. दिग्विजय सिंह मां. टेंगसे का विषय 'मराठी-हिंदी अनुवाद : भाषिक-सांस्कृतिक रूप एवं समस्याएँ' रहा।

अंत में डॉ. विश्वास पाटील ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि अनुवाद मात्र भाषिक आदान-प्रदान नहीं है, वरन् सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी है। सत्र का संचालन डॉ. शिखा माहेश्वरी एवं आभार डॉ. शमा ने दिया।

अनुवाद एवं भाषा विज्ञान

दूसरे दिन तृतीय अकादमिक सत्र का विषय 'अनुवाद एवं भाषाविज्ञान' था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. शैलेन्द्र कुमार सिंह, (पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय) ने की। इसमें विषय प्रवर्तन करते हुए प्रो. हरीश कुमार सेठी ने 'अंग्रेजी आर्टिकल ए. ऐन. दि, हिंदी अनुवाद का परिप्रेक्ष्य' विषय पर अपनी बात रखी। डॉ. गुंजन वर्मा एवं डॉ. अभिजीत प्रसाद का विषय 'हिंदी क्रियाओं का रूपसाधित बनाम अन्य शब्द-वर्गीय समनामी रूप (मशीनी अनुवाद की एक समस्या का रूप)' रहा। डॉ. सुधांशु कुमार का विषय "बहुभाषिकता और भारतीय भाषाओं में अनुवाद की स्थिति" था। डॉ. धनंजय कुमार तिवारी एवं राहुल रंजन मिश्रा का विषय "कानूनी भाषा अनुवाद समतुल्यता की समस्याएँ : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन" था। हर्ष उरमालिया का विषय "संरचनावाद, विखंडनवाद और अनुवाद" पर केंद्रित रहा। सत्र का संचालन डॉ. रेणु चौधरी एवं आभार डॉ. दीपामणि बरुआ ने दिया।

मानव अनुवाद का विकल्प नहीं मशीन

चतुर्थ अकादमिक सत्र की अध्यक्षता प्रो. राम भावसार, (नॉर्थ महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव) ने की। इसमें संयुक्त निदेशक, प्रगत संगणन विकास केंद्र, पुणे का विषय 'अनुवाद एवं मशीनी अनुवाद' पर केंद्रित रहा। डॉ. सोनू, सैनी का विषय मशीन अनुवाद या कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के अनुवाद में प्रयोग, आशीष कुमार शाह का 'अनुवाद सिद्धांत की परंपरा और मशीनी अनुवाद' पर केंद्रित रहा। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. राम भावसार ने कहा कि मशीनी अनुवाद निरंतर भाषायी अधिगम पर आधारित है अर्थात् मशीन भी लगातार सीख रही है फिर भी ये कभी भी मानवीय अनुवाद की जगह नहीं ले सकती। सत्र का संचालन डॉ. अरविंद रावत एवं आभार डॉ. शमा ने दिया।

अनुवाद यानी अभद्र का भद्र बन जाना: प्रो. नवीन

पंचम अकादमिक सत्र की अध्यक्षता प्रो. देवशंकर नवीन, (जे.एन.यू., दिल्ली) ने की। विषय परिवर्तन के बाद डॉ. विवेकानंद उपाध्याय, (असिस्टेंट प्रोफेसर, महिला

298वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम



298वें नवीकरण कार्यक्रम का आयोजन

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के मैसूर केंद्र द्वारा केरल राज्य के जिला मलप्पुरम के माध्यमिक शिक्षकों के लिए दिनांक 24.10.2025 से 07.11.2025 तक 12 कार्य दिवसीय 298वें नवीकरण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में कुल 30 शिक्षकों (15 महिला एवं 15 पुरुष) ने पंजीकरण किया। कार्यक्रम का आयोजन मलप्पुरम जिले के कोट्टाकल के गवर्नमेंट राजा हायर सेकेंडरी स्कूल (एस.एस.एच.) कोट्टाकल, मल्लापुरम में किया गया। दिनांक 24.10.2025 को कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता निदेशक, प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने की। कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना से हुई उसके पश्चात् संस्थान गीत प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. रणजीत भारती ने उपस्थित अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। स्वागत भाषण के दौरान उन्होंने कार्यक्रम के उद्देश्य एवं रूपरेखा के बारे में प्रतिभागियों बताया। मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित श्री रफीकपी वी, डी डी

ई, मलप्पुरम, केरल ने सभी प्रतिभागियों को कार्यक्रम को सफलतापूर्वक करने के लिए शुभकामनाएँ दी।

कार्यक्रम के दौरान शैक्षिक सदस्य, डॉ. एम. के. प्रीता, (सेवानिवृत्त, हिंदी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय), श्रीमती बबिता, (हेडमास्टर, गवर्नमेंट राजा हायर सेकेंडरी स्कूल, कोट्टाकल), श्री मिथुन, कोट्टाकल, श्री राघवेंद्र, लिपिक, मैसूर केंद्र उपस्थित थे।

नवीकरण कार्यक्रम के प्रथम सप्ताह में प्रतिभागियों के लिए दो विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रथम व्याख्यान दिनांक 27.10.2025 को प्रो. प्रमोद कोवप्रद, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय द्वारा 'मातृ भाषा एवं अन्य भाषा शिक्षण' विषय पर दिया गया। द्वितीय विशेष व्याख्यान दिनांक 29.10.2025 को प्रो. आर. सुरेंद्रन (अरसु), सेवानिवृत्त विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय द्वारा 'अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान एवं अनुवाद' विषय पर विशेष दिया गया। कार्यक्रम का समापन सत्र दिनांक 07.11.2025 को आयोजित किया जाएगा।

महाविद्यालय, बी.एच.यू. वाराणसी), डॉ. सच्चिदानंद स्नेही, (सह-अध्यापक, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय), उत्कर्ष पांडेय, (शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय), विशाल लोधा, (शोधार्थी, जे.एन.यू., नई दिल्ली) एम.एस. सरस्वती दुबे, (शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय), आनंद कुमार सोनी, (शोधार्थी, इग्नू, दिल्ली) ने अनुवाद के विभिन्न विषयों पर प्रपत्र प्रस्तुत किए इस क्रम में रितिका, (शोधार्थी, अनुवाद अध्ययन, इग्नू, दिल्ली),

का विषय 'गीतनाट्य के अनुवाद की चुनौतियाँ' पर केंद्रित रहा।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. देवशंकर नवीन ने कहा कि एक अभद्र मनुष्य का भद्र मनुष्य बन जाना ही अनुवाद है। मशीनी अनुवाद को हमने अनुवादक समझ लिया, यह हमारी गलती है।

मशीनी अनुवाद मानव अनुवाद का काम नहीं कर सकता है। सत्र का संचालन डॉ. रेणु चौधरी एवं आभार डॉ. अनामिका गुप्ता ने दिया।

281वाँ हिंदी शिक्षक नवीकरण पाठ्यक्रम

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र द्वारा दिनांक 7 अक्टूबर 2025 से 17 अक्टूबर 2025 तक अरुणाचल प्रदेश के दिबांग वैली जिले के सेवारत हिंदी शिक्षकों के लिए पीएमश्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, अंगुली में 281वें हिंदी शिक्षक नवीकरण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय निदेशक डॉ. चंद्रशेखर चौबे के संयोजन में शुरू हुए पाठ्यक्रम के प्रथम दिन प्रतिभागी शिक्षकों के नामांकन के पश्चात् औपचारिक उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक महोदय प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी द्वारा ऑनलाइन माध्यम से की गई। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री तेजिग वानदा, (स्कूल शिक्षा निदेशक, दिबांग वैली जिला, अनिनी) उपस्थित थे। प्रतिभागी अध्यापिकाओं द्वारा ईश्वर वंदना एवं स्वागत गीत के पश्चात् मुख्य अतिथि श्री तेजिग वानदा, नवीकरण पाठ्यक्रम के संयोजक डॉ. चंद्रशेखर चौबे एवं विषय विशेषज्ञ डॉ. शिवम कुमारको सम्मानित कर इस कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

मुख्य अतिथि तेजिग वानदा ने



अपने संबोधन में दिबांग वैली जिले के हिंदी शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु नवीकरण पाठ्यक्रम का आयोजन करने के लिए संस्थान के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने सभी प्रतिभागी शिक्षकों को नवीकरण पाठ्यक्रम में नियमित रूप से उपस्थित रहकर हिंदी का ज्ञान बढ़ाने एवं नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार कक्षा शिक्षण के नए पहलुओं से अवगत होने का आह्वान किया। डॉ. चौबे ने अपने वक्तव्य में केंद्रीय हिंदी संस्थान की विभिन्न शैक्षिक एवं शोध गतिविधियों एवं संचालित पाठ्यक्रमों से प्रतिभागियों को विस्तारपूर्वक अवगत कराते हुए नवीकरण पाठ्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की और प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया। विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित डॉ. शिवम कुमार सहित समस्त प्रतिभागियों ने भी

अपने विचार व्यक्त किए। अंत में राष्ट्रगान के साथ उद्घाटन समारोह का समापन हुआ।

द्वितीय सत्र में सभी प्रतिभागियों के पूर्वज्ञान को जानने की दृष्टि से पूर्व परीक्षण परीक्षा का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् प्रतिदिन नियमित रूप छात्रों की कक्षाएँ संचालित की गईं। इस पाठ्यक्रम के दौरान डॉ. चंद्रशेखर चौबे ने हिंदी भाषा शिक्षण एवं हिंदी साहित्य, विनय कुमार ने हिंदी व्याकरण एवं अभ्यास तथा डॉ. शिवम कुमार ने मानक हिंदी भाषा का अध्यापन किया।

दिनांक 17 अक्टूबर 2025 को इस नवीकरण पाठ्यक्रम के समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. चंद्रशेखर चौबे, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, गुवाहाटी केंद्र और

स्कूल शिक्षा निदेशक श्री तेजिग वानदा विषय विशेषज्ञ श्री विनय कुमार और डॉ. शिवम कुमार सहित अन्यी अधिकारीगण भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रतिभागियों के द्वारा गुरु वंदना एवं स्वागत गीत के साथ किया गया। तत्पश्चात् प्रतिभागी अध्यापकों द्वारा सभी अतिथियों और विषय विशेषज्ञों को उपहार देकर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् कार्यक्रम की प्रतिवेदन प्रस्तुति के साथ-साथ चार प्रतिभागी शिक्षकों ने नवीकरण पाठ्यक्रम के अपने-अपने अनुभवों को साझा किया तथा लोकगीत और लोकनृत्य भी प्रस्तुत किया।

सभी प्रतिभागियों ने इस नवीकरण पाठ्यक्रम को सफल और भरपूर लाभ प्रदान करने वाला बताया। प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा करने के दौरान इस बात पर जोर दिया कि हिंदी शिक्षकों के लिए इस तरह के कार्यक्रम बार-बार हों। कार्यक्रम के अंत में कक्षा में नियमित रूप से उपस्थित रहकर प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले 26 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। इसके बाद राष्ट्रगान का गायन हुआ और अल्पाहार के साथ ही इस कार्यक्रम की समाप्ति हुई।



..... पाठक के पत्र

एक ओर हिंदीतर राज्यों के विश्वविद्यालयों और विदेशों के लगभग 176 विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं में हजारों की संख्या में शिक्षार्थी हिंदी के अध्ययन-अध्यापन और शोध कार्य में समर्पण-भावना तथा पूरी निष्ठा से प्रवृत्त तथा संलग्न हैं वहीं दूसरी ओर हिंदी भाषा-क्षेत्र में ही अनेक लोग हिंदी के विरुद्ध साजिश रच रहे हैं। सामान्य व्यक्ति ही नहीं, हिंदी के तथाकथित विद्वान भी हिंदी का अर्थ खड़ी बोली मानने की भूल कर रहे हैं। हिंदी साहित्य को जिंदगी भर पढ़ाने वाले, हिंदी की रोजी रोटी खाने वाले, हिंदी की कक्षाओं में हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थियों को विद्यापति, जायसी, तुलसीदास, सूरदास जैसे हिंदी के महान साहित्यकारों की रचनाओं को पढ़ाने वाले अध्यापक तथा इन पर शोध एवं अनुसंधान करने एवं कराने वाले आलोचक भी न जाने किस लालच में या आँखों पर पट्टी बाँधकर यह घोषणा कर रहे हैं कि हिंदी का अर्थ तो केवल खड़ी बोली है। भाषा विज्ञान के भाषा-भूगोल एवं बोली विज्ञान के सिद्धांतों से अनभिज्ञ ये लोग ऐसे वक्तव्य जारी कर रहे हैं जैसे वे इन विषयों के विशेषज्ञ हों। क्षेत्रीय भाषाओं को उभारकर एवं भड़काकर ये लोग हिंदी की समावेशी एवं संश्लिष्ट परम्परा को नष्ट करने पर

(महावीर सरन जैन)
सेवानिवृत्त निदेशक
केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा

‘मामला’ और ‘मसला’

‘आप का ‘मसला’ सुलझा या नहीं?’ ‘मसला’ माने ‘समस्या, सवाल’। (अरबी में ‘मस्सलः’।) ‘आप का मामला’ सुलझा या नहीं?’ ‘मामला’ माने ‘विवाद, मुकदमा’। (अरबी में ‘मुआमिलः’।) ‘मुआमला’ या ‘मामला’ बराबर ‘आपसी बात’ है। वह ‘लेन-देन’ है, ‘धंधा’ है, ‘घटना’ है। वह ‘मुख्य बात या विषय’ है। ‘दिल का ‘मुआमला’ है, कोई दिल्लगी नहीं।’ ‘मसला’ से ‘मसल’ पर आए। ‘यह तो वही ‘मसल’ हुई कि... ‘शौकीन बुढ़िया, चटाई का लँहगा’...या ‘सिर मुँडते ही ओले पड़े’, आदि। ‘मसल’ माने ‘कहावत, लोकोक्ति’। अब ‘मिसाल’। ‘आप अपनी बात को साबित करने के लिए कोई ‘मिसाल’ पेश कीजिए।’ ‘मिसाल’ माने ‘उदाहरण, आदर्श’। ‘मिसाल’ के बाद ‘मसलन’। ‘कुछ जानवर काफ़ी बेवकूफ़ होते हैं- ‘मसलन’ गधा और भैंसा। ‘मसलन’ माने ‘मिसाल के तौर पर। शब्द ‘मिसालन’ भी है। अनेक हिंदी के विद्वान लेखन में वर्तनी की एकरूपता पर जोर देते हैं मिसालन प्रो. धनजी प्रसाद डॉक्टर पराक्रम आदि आदि।

अंत में ‘मिसल’, जो ‘पुस्तक की सिलाई के पूर्व फ़रमों का सिलसिलेवार जमा हुआ रूप’ है और जो अरबी में मूलतः ‘किसी विवाद की कार्यवाही से संबंधित नथ्थी किए हुए कागज़ात’ के लिए प्रयुक्त होता है।

प्रस्तुति- अनिल तिवारी

प्रकाशन विभाग

संस्थान प्रकाशनों की बिक्री से संबंधित भुगतान को ऑनलाइन स्वीकार करने की सुविधा उपलब्ध है इसके लिए पृथक से खाता खोला गया है। क्यू आर कोड के माध्यम से भी भुगतान किया जा सकता है। खाता विवरण इस प्रकार है-

Account Holder's Name:

THE KENDRIYA

HINDI SHIKSHANA MANDAL AGRA

Account Number : 42583260224

IFSC : SBIN0017686

MICR : 282002047

Branch : KHANDARI CROSSING AGRA

नोट: 1. संस्थान की प्रकाशन सूची संस्थान

वेबसाइट

www.hindisansthan.in पर उपलब्ध है।

2. सूची में से चयनित पुस्तकों का क्रयदेश ई-मेल publicationmanagerkhs@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

Merchant Name :

THE KENDRIYA HINDI SHIKH-SANA MANDAL

UPI ID : thekhsagra@sbi



बैगा जनजाति की भाषाई दक्षता, हिंदी से संपर्क

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा पाणिनि व्याख्यानमाला के अंतर्गत चौथे व्याख्यान का आयोजन 31 अक्टूबर को किया गया। यह व्याख्यान 'बैगा जनजाति, बैगानी भाषा समुदाय और हिंदी भाषा' विषय पर केंद्रित रहा, जिसे प्रख्यात भाषाविद् प्रो. दिलीप सिंह ने प्रस्तुत किया। उन्होंने विस्तार से बताया कि किस प्रकार बैगा समुदाय मध्य भारत में अपनी बहुभाषिक पहचान को बनाए रखते हुए हिंदी और क्षेत्रीय बोलियों के साथ सफलतापूर्वक संवाद स्थापित करता है। व्याख्यान कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने की, जबकि शैक्षिक समन्वयक की भूमिका प्रो. हरिशंकर ने निभाई। कार्यक्रम का संयोजन एवं व्यवस्थापन अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी ने किया।

प्रो. दिलीप सिंह ने बताया कि मध्य प्रदेश के हिंदी भाषी क्षेत्र और छत्तीसगढ़



की सीमा पर निवास करने वाला बैगा समुदाय स्वाभाविक रूप से एक बहुभाषी समुदाय है। चूंकि यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ी बोली के प्रभाव में भी है, इसलिए बैगानी भाषा समुदाय निरंतर हिंदी भाषा और छत्तीसगढ़ी बोली के संपर्क में रहता है। प्रो. सिंह के अनुसार, बैगानी भाषा पर छत्तीसगढ़ी बोली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस समुदाय के लोग संदर्भानुसार अपनी संप्रेषण व्यवस्था में इन भाषाओं का प्रयोग करते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि हिंदी भाषा इन जनजातियों के बीच बृहत्तर

संपर्क भाषा का कार्य करती है।

प्रो. सिंह ने जनजातीय बच्चों की भाषाई दक्षता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस क्षेत्र के विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम हिंदी होने के कारण बच्चे हिंदी भाषा को अपने लिए अजनबी नहीं समझते। हालांकि, जनजातियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली हिंदी मानक हिंदी नहीं होती, बल्कि इसका एक विशिष्ट प्रकार का स्थानीय या क्षेत्रीय रूप मिलता है।

उन्होंने जोर दिया कि बैगानी भाषा समुदाय के लोग कोड मिश्रण के साथ ही कोड परिवर्तन की प्रविधि को अपनाने में

भी दक्ष हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह समुदाय बहुभाषिक होते हुए भी अपनी मातृभाषा (बैगानी) का अधिकांश संदर्भों में प्रयोग कर इसका संरक्षण करता है।

प्रो. सिंह ने बताया कि बैगा जनजाति केवल भाषाई दृष्टि से ही समृद्ध नहीं है, बल्कि यह समुदाय परंपरागत ज्ञान और कौशल में भी सिद्धहस्त है। उन्होंने कहा, 'बैगा मूलतः कृषक हैं, और कृषि कार्य की उन्हें पूर्ण जानकारी है। इसके अतिरिक्त, वे अपने औषधि-निर्माण-कौशल के कारण भी विशेष हैं। यही कारण है कि उनके भाषाई कोश में कृषि कार्य, नृत्य-संगीत, पूजा पाठ, पर्व-त्योहार और लोकगीतों से जुड़े ज्ञान का उन्नत स्वरूप दिखाई देता है। यह ज्ञान उनकी मातृभाषा बैगानी के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पुरुषोत्तम पाटील ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ. परमान सिंह द्वारा किया गया।

लोक भाषा का महत्व

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा तथा राजकीय महाविद्यालय, श्री रेणुका जी ददाहू, जिला सिरमौर, हिमाचल प्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 17 और 18 अक्टूबर 2025 को "लोक भाषा का महत्व" विषयक दो दिवसीय लघु बजटीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. पवन कुमार (प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय रेणुका जी ददाहू) ने की।

मुख्य अतिथि के रूप में पद्मश्री विद्यानंद सरक, विशिष्ट अतिथि प्रो. धनजी प्रसाद और बीज वक्ता के रूप में डॉ. शोभारानी ने हिस्सा लिया। संगोष्ठी हेतु देशभर से लगभग 30 शोधपत्र प्राप्त हुए, जिनमें विभिन्न राज्यों - हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, और राजस्थान के विद्वानों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना से हुआ। तत्पश्चात् संयोजक प्रो. नीलम कुमारी ने संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की और इसके उद्देश्य स्पष्ट किए। बीज वक्ता डॉ. शोभा रानी ने अपने संबोधन में कहा



दो दिवसीय लघु बजटीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

कि "लोक भाषा वह सेतु है जो साहित्य और समाज को जोड़ती है। यह व्यक्ति के विचार, संवेदना और पहचान का आधार होती है।"

चैत राम गर्ग ने लोक भाषाओं की सामाजिक भूमिका पर प्रकाश डाला। अंत में डॉ. मिल्ला राम ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं आयोजन समिति का आभार व्यक्त किया।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजन

तनवर ने की। इस सत्र में श्रीमती सरोज पटेल 'लोक गीतों में जीवन दर्शन', आदर्श पटेल - 'लोककथाओं का सामाजिक परिप्रेक्ष्य', सुरेखा कुमारी - 'महिलाओं की भूमिका लोक भाषा के संवर्धन में' विषयक शोध पत्र प्रस्तुत किए। प्रो. अशोक कुमार ने सत्र का संचालन करते हुए शोधकर्ताओं को प्रोत्साहित किया और उनके प्रश्नों का उत्तर संवादात्मक शैली में दिया।

सत्र के अंत में प्रो. सुरम्या गुसाई ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. चैत राम गर्ग ने की। इस सत्र में भी क्रमशः डॉ. मोल्लम डोल्मा - 'हिमालयी लोक भाषाओं की विशिष्टताएँ', डॉ. प्रियंका भारद्वाज - 'लोक भाषा और शिक्षा का अंतर्संबंध', केवल शर्मा - 'लोक भाषा और डिजिटल मीडिया', के शोध पत्र प्रस्तुत हुए। सत्र का संचालन प्रो. नीलम अंग्रिस तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मिल्ला राम ने किया।

दूसरे दिन का आरंभ तृतीय तकनीकी सत्र से हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. वंदना श्रीवास्तव ने की। इस सत्र में तनिष्का युवा पीढ़ी और लोकभाषा का भविष्य, प्रो. बारू राम टाकुर लोक संस्कृति और शिक्षा विषय पर अपने विचार रखे। सत्र का संचालन प्रो. सुरेखा गुप्ता ने किया और प्रो. नविता नेहरा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य अतिथि श्री के एल सहगल, मुख्य वक्ता डॉ. जय चंद शर्मा, और विशिष्ट वक्ता डॉ. शिव दयाल पटेल उपस्थित रहे। सत्र का संचालन प्रो. नीलम कुमारी ने किया, और अंत में डॉ. मिल्ला राम ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।

संरक्षक
प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

संपादक
डॉ. अपर्णा सारस्वत

संपादन सहयोग
अनिल तिवारी

टाइप सेटिंग
योगेन्द्र सिंह राणा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स,
गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है। संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं। संस्थान समाचार का ई-मेल: sansthansamacharkhs2021@gmail.com